गाने से लेकर इंटरनेट तक एक नेटवर्क पर

कानपुर, हमारे संवाददाता : आईआईटी से इलेक्ट्रानिक्स इंजीनियर की डिग्री लेने वाले कंवर जीत सिंह सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र में काम करने वाली कंपनी का संचालन कर रहे हैं। उन्होंने पैकेट स्विचिंग प्रणाली ईजाद करते हुए आईटी क्षेत्र में मील का पत्थर रखा है। यही नहीं श्री सिंह की कंपनी भारत की पहली कंपनी है जिसके उत्पाद तमाम देशों में पसंद किये जा रहे हैं।

आईआईटी में शुरू हुए 1982 बैच के पूर्व छात्र संगमन में शामिल होने आये श्री सिंह ने कहा कि मौजूदा समय विभिन्न सुविधाएं जैसे आडियो, वीडियो, इंटरनेट आदि के लिए अलग-अलग नेटवर्क कनेक्शन की जरूरत होती है और यह सर्किट स्विचिंग सिस्टम के माध्यम से काम करते हैं। कंपनी द्वारा तैयार किया गया पैकेट स्विचिंग सिस्टम से एक ही नेटवर्क से तमाम सुविधाओं का मजा लिया जा सकता है। इसके लिए सभी नेटवर्क एक ही आप्टिकल फाइबर पर रहेंगे और व्यक्ति की जरूरत के अनुसार सेवा प्रदाता द्वारा पैकेट स्विचिंग के माध्यम से अलग कर के उपभोक्ताओं को दिया जा सकेगा। संस्थान में स्वर्ण पदक से सम्मानित हो चुके श्री सिंह ने स्वयं द्वारा संचालित नेटवर्क कंपनी के उत्पादों के विषय में बताया कि देश की यह पहली कंपनी है जो दुनिया के लगभग 60 देशों को पैकेट स्विचिंग उपकरण और अन्य गुणवत्ता युक्त उत्पाद की आपूर्ति कर रही है।

अब मरीजों पर नहीं कंप्यूटर पर प्रयोग करेंगे डॉक्टर

• मेडिकल छात्रों और सेना के लिए विकसित किया साफ्टवेयर

कानपुर, हमारे संवाददाता : अमेरिका में एजूकेशन मैनेजमेंट साल्यूशन पर साफ्टवेयर विकसित करने वाले आईआईटी के पूर्व छात्र अनुराग सिंह ने बताया कि उनके द्वारा विकसित सेम्यूलेशन सिस्टम से चिकित्सा विज्ञान के छात्र अब मरीजों पर सीधे प्रयोग की जगह कंप्यूटर पर ही सटीक प्रशिक्षण ले सकेंगे। सिस्टम का प्रयोग सैन्य प्रशिक्षण में भी किया जा सकेगा।

मेडिकल छात्रों के लिए विकसित एजूकेशन मैनेजमेंट साल्यूशन की जानकारी देते हुए कहा कि विकसित साफ्टवेयर मेडिकल शिक्षा को नया आयाम देगा। मौजूदा समय शिक्षा के साथ छात्रों को मरीजों पर ही प्रयोग कराया जाता है। प्रयोग भले ही वरिष्ठ चिकित्सकों की निगरानी में होता है लेकिन कहीं भी चूक होने पर मरीज की जान पर बन आने की आशंका रहती है। सेम्यूलेशन सिस्टम में स्क्रीन पर ही लक्षणों के आधार पर मरीज को दवा दी जायेगी। यदि दवा की डोज गलत अथवा दवा ही गलत होती है तो उससे होने वाले रिएक्शन को भी स्क्रीन पर ही देखा जा सकेगा। इससे प्रशिक्षण के दौरान मरीज के किसी तरह का खतरा नहीं होगा और छात्रों को सटीक जानकारी भी मिलेगी।

इसके साथ ही सिस्टम में थोड़ा सा बदलाव कर इसका प्रयोग सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए भी किया जा सकेगा। उन्हें युद्ध के मैदान का नजारा कंप्यूटर पर दिखेगा और दुश्मन से निपटने का तरीका भी वह स्क्रीन पर ही सीख सकेंगे।

सुरक्षा और साधन मिले तो सँवार देंगे सूबा

• आईआईटी के 1982 बैच छात्रों का रजत जयंती वर्ष

कानपुर, हमारे संवाददाता : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के वर्ष 1982 बैच के रजत जयंती वर्ष पर एकत्र हुए पूर्व छात्रों में सहपाठियों के साथ मिल कर पुरानी यादें ताजा की। कार्यक्रम में हिस्सा लेने आये पूर्व छात्र प्रमथ राज सिन्हा ने कहा कि आईआईटीयंस इस शहर (कानपुर) और प्रदेश के लिए बहुत कुछ करना चाहते हैं लेकिन असुरक्षा का भय क़दम पीछे खींचने पर मजबूर कर देता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार सुरक्षा और साधन मुहैया कराये तो वे विकास को अलग रंगत दे देंगे।

मूल रूप से पटना निवासी और आईआईटी से कंप्यूटर इंजीनियरिंग की डिग्री लेने वाले श्री सिन्हा ने कहा कि जिस संस्थान और प्रदेश में शिक्षा लेकर अपना कैरियर बनाया है वहां के प्रति उनकी भी कुछ न कुछ जवाबदेही जरूर बनती है। आज तक उनको किसी ने इस बात का आमंत्रण नहीं दिया कि वे प्रदेश में अपनी इकाई स्थापित कर यहां के विकास में हाथ बटायें। बिना आमंत्रण अपनी तरफ से प्रयास के सवाल पर कहा कि कानून व्यवस्था को देखते हुए सुरक्षा के प्रति काफी चिंतित रहते हैं। उन्होंने कहा कि जो हालात देखने को मिलते हैं उससे साहस नहीं होता कि कोई नया काम शुरू किया जाये। श्री सिन्हा ने पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि आईआईटीयंस पूरी तरह शोध और शिक्षा से जुड़े लोग होते हैं। इस लिए संसाधन और सुरक्षा तो शासन-प्रशासन को ही मुहैया करानी होगी तभी वे खुल कर काम कर सकेंगे।

सहपाठियों की याद में गमजदा

पूर्व छात्र संगमन में परिचय सत्र के दौरान बच्चों और पत्नी के साथ आये आईआईटीयंस अपने बैच के चार उन छात्रों की याद कर गमजदा हुए जो उन्हें अलविदा कह इस जहाँ से कूच कर गये हैं। परिचय सत्र में संयोजक और इसी बैच के प्रो. धीरज सांघी ने देर शाम फिल्म और आर्केस्ट्रा कार्यक्रम की जानकारी दी। एक दूसरे पर फब्तियां और हास परिहास के साथ शुरू हुआ कार्यक्रम उस समय निस्तब्धता के वातावरण में डूब गया जब प्रो. सांघी ने 220 छात्र-छात्राओं के इस बैच से चार लोगों के कम हो जाने की जानकारी दी। सभी सदस्यों के बताया गया कि उनके साथ के ही पट्टाभिरामन और देवाशीष दास हृदयाघात के शिकार हो गये। मैकेनिकल इंजीनियर अरुण प्रकाश एक सड़क दुर्घटना में काल कवलित हो गये।

सर्वाधिक मार्मिक दास्तान विवेक कुमार की थी जो कार से यात्रा करते समय इतनी गंभीर दुर्घटना के शिकार हुए कि घटना स्थल पर ही उनकी मौत हो गयी। घटना के छः माह पूर्व ही उनका विवाह हुआ था।